



ISSN -PRINT-2231-3613/DNLNIE2455-8729
International Educational Journal

UGC APPROVAL NO. - 42652

CHETANA

Received on 4th April 2018, Revised on 6th April 2018; Accepted 7th April 2018

आलेख

स्व-अनुशासन एवं व्यवस्था

* डॉ. संगीता सोनी

व्याख्याता, बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई)

गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

Key words: स्वअनुशासन, नैतिक संकट, आदर्श चरित्रों का अभाव, दूषित शिक्षा, घर का कठोर एवं भावनारहित वातावरण, राजनीतिक दलबन्दी, न्यूनतम सुविधाओं का अभाव आदि।

प्रस्तावना – स्वअनुशासन और व्यवस्था क्या है? इसका हमारे जीवन में क्या सम्बन्ध है? क्या इसका सन्तुलित अवस्था में रहना हमारे लिए आवश्यक है? इन्हें सन्तुलित रखना आज शिक्षा जगत के लिए आवश्यक हो गया है। आज स्वअनुशासन और व्यवस्था बनाये रखना उच्च शिक्षा के लिए चुनौती भी है और समाधान भी। आज की शिक्षा व्यावहारिक ज्ञान पर कम और किताबी ज्ञान पर अधिक आधारित है। जिससे विद्यार्थियों का जीवन अव्यवस्था और अनुशासन हीनता की ओर ढकेल रहा है। आज की शिक्षा को जीवन में व्यवहारिक ज्ञान का साधन नहीं बल्कि एक तरह के बोझ जैसा माना जा रहा है जो अनुशासन हीनता को बढ़ावा दे रही है। अनुशासन के लिए आवश्यक है स्वयं की पहचान करना, स्वयं के गुणों एवं अवगुणों की पहचान करना, समय व शक्ति का सही नियोजन करना वर्तमान में अनुशासन हीनता की वजह से ही व्यवस्था बिगड़ने लगी है। नैतिक संकट, आदर्श चरित्रों का अभाव, दूषित शिक्षा, घर का कठोर एवं भावनारहित वातावरण, राजनीतिक दलबन्दी, न्यूनतम सुविधाओं का अभाव, गरीबी, अशिक्षा, आवश्यकताओं का पूर्ण न हो पाना उच्च शिक्षा के मार्ग में बाधक साबित हो रही है। स्वअनुशासन नियमाचरणों, विधानों, उपदेशों-आदेशों से होता है जिनका पालन व्यक्ति के स्वयं के विकास के लिए एवं समाज के विकास के लिए होता है का वर्तमान में अभाव पाया जाता है। स्वभाव से नियमों का पालन करने वाले नगण्य होते हैं। अतः सुव्यवस्था बनाने के लिए बाह्य उपचारों से नियम पालन करवाना आवश्यक है। जो निम्न हो सकते हैं –

1. स्वयं के द्वारा स्वयं का अवलोकन

(क) डायरी लेखन – इससे निम्न तथ्यों का समावेशन विशेष रूप से हो –

1. स्व विश्लेषण

2. पर गुण विश्लेषण

3. स्वतः सुझाव

4. स्व कथ्य

5. स्व समीक्षा

6. घटना के प्रति अपना चन्तन

7. किसी एक विषय पर नये नये प्रयोग, अवलोकन, विश्लेषण, सामान्य नियम का निर्माण व परीक्षण।

(ख) दैनिक मानसिक अवलोकन – जैसे अपनी अच्छाई व बुराई, गुण व दोष, सबल व दुर्बल पक्ष की जानकारी

- विश्वस्त, गंभीर व विशेषज्ञ व्यक्तियों से परामर्श अर्थात् उससे अपने बारे में जानना, अपनी व्यवस्था के बारे में जानना जो अपनी विद्या की विशिष्टता द्वारा हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं।
- कार्य कुशलता – स्व अनुशासन एवं व्यवस्था बनाये रखने के लिए कार्य कुशलता आवश्यक ही नहीं अनिवार्य तत्व है।

1. कार्य के बारे में पर्याप्त ज्ञान
2. तन्मयता और एकाग्रता
3. मेहनत व लगन से कार्य
4. आवेशो पर नियन्त्रण

संस्कृति के इस संक्रमण काल में समाज की मर्यादाओं के अवनयन के साथ-साथ व्यक्ति भी अपने जीवन मूल्यों की आदर्श राह से भटक गया है। स्वस्थ, सन्तुलित एवं समन्वित मानव जीवन के लिए वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की पुनर्स्थापना एवं उनका पोषण आज की महती आवश्यकता है यह तभी संभव है जब व्यक्ति के जीवन में स्व अनुशासन को समुचित स्थान मिले। स्व अनुशासन से व्यक्तित्व विकास का मार्ग प्रशस्त होता है और स्वस्थ सामाजिक संरचना का संकल्प भी स्व अनुशासन स्व प्रबन्धन के बिना अधूरा है क्योंकि इसकी धूरी दूसरों पर नहीं स्वयं पर आधारित है और इसका मूल मंत्र है स्वयं के प्रति जागरूकता। सही अर्थों में स्व अनुशासन का लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब अन्तर्जगत की भावनाओं एवं कल्पनाओं और बाहरी जगत की अन्यान्य व्यवस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित किया जा सकें। स्व अनुशासन व्यवस्था को बनाने में और स्व प्रबन्धन दोनों का कार्य करता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करते समय व्यवस्था बनाये रखने की जिम्मेदारी स्वयं व्यक्ति की होती है। इस उम्र में स्वयं का विकास स्वयं के द्वारा ही हो सकता है।

जीवन के प्रति स्वयं के सकारात्मक दृष्टिकोण स्वस्थ जीवन शैली, धैर्य और साहस के द्वारा अपने विकास की जिम्मेदारी स्वयं को ही लेनी होती है। स्वयं के प्रति जागरूकता, स्वयं का विवेक, स्वयं की उदारता ही व्यक्तित्व के सर्वहिताय विकास का आधार बनता है। स्व अनुशासन के द्वारा ही व्यक्ति स्व प्रबन्धन में कुशल और निपुण होगा तभी वह अपने व्यक्तित्व को सार्थकता व विराटता प्रदान कर पायेगा।

अनुशासन शब्द को आदेश, नियन्त्रण, आज्ञा, उपदेश, कर्तव्य का विधान, नियमाचरण आदि से भी जान सकते हैं। इसे मूलतः, व्यवस्था से शासन करना मानते हैं। स्व अनुशासन स्व नियन्त्रण के साथ दूसरों को प्रशिक्षित करना व शिक्षा से भी लिया जा सकता है। किसी भी कार्य को पूर्ण करने में व्यवस्था प्रबंधन या बंदोबस्त नियम आवश्यक है। अतः इस व्यवस्था प्रबंधन या विधान, नियमाचरण आदि से भी जान सकते हैं। इसे मूलतः, व्यवस्था से शासन करना मानते हैं। स्व अनुशासन स्व नियन्त्रण के साथ दूसरों को प्रशिक्षित करना व शिक्षा से भी लिया जा सकता है। किसी भी कार्य को पूर्ण करने में व्यवस्था प्रबंधन या बंदोबस्त नियम आवश्यक है। अतः इस व्यवस्था प्रबंधन के नियमों, आदेशों, आज्ञा या निमन्त्रण को पालन-मानना स्व अनुशासन है। स्व अनुशासन में व्यवस्था और व्यवस्थापन से जुड़े नियमाचरण होते हैं इसलिए इसमें आत्म संयम एवं विनम्रता भी आवश्यक है।

अनुशासन व्यक्ति को व्यवस्था, उत्तमाचरण और सवेत्तित की आदत डालने के लिए आवश्यक है। स्व अनुशासन और व्यवस्था दोनों शब्द ऐसे हैं जो एक दूसरे के समानार्थी हैं अन्तर इतना है कि व्यक्ति को संस्कारित करने हेतु प्रभाव

डालना अनुशासन है और यह प्रभाव डालने के लिए साधन जुटाना व्यवस्था है। स्व अनुशासन का सम्बन्ध आन्तरिक तत्वों आदत एवं चरित्र से है और व्यवस्था का सम्बन्ध बाह्य तत्वों और सुविधाओं से है।

स्व-अनुशासन व व्यवस्था बनाये रखने के अनिवार्य तत्व –

1. मर्यादा पालन
2. नियमबद्धता
3. नियन्त्रण
4. व्यवस्था प्रबन्ध
5. नियमाचरण – (दैनिक नियम)
6. कर्तव्य का विधान
7. आदेश
8. आज्ञा
9. विनय
10. आत्मसंयम एवं इन्द्रिय संयम

स्व अनुशासन से व्यक्ति को अधिकार एवं कर्तव्य की शिक्षा मिलती है। स्व अनुशासन का सम्बन्ध अन्तर्निहित प्रेरणाओं व कित्तियों से होता है। स्व अनुशासन के लिए सुदृढ़ सामाजिक व्यवस्था एवं सुप्रबंधन आवश्यक होता है। स्व अनुशासन ऐसी शिक्षण या प्रशिक्षण विधि है जिससे मनु य स्वयं पर नियन्त्रण करना सीख लेता है। स्व-अनुशासन में आत्मसंयम, इन्द्रिय निग्रह, इन्द्रिय संयम भी निहित है। इस सबका सम्बन्ध त्याग से है।

अनुशासन में आदर्श या सुव्यवस्था हेतु स्वहित स्वरुचि का त्याग करना पड़ता है। स्व-अनुशासन द्वारा इस प्रकार नियन्त्रण करना सीख सकते हैं जिससे सफलता मितत्ययता और व्यवस्था सुनिश्चित हो जाती है। स्व-अनुशासन ऐसा साधन है जिससे व्यक्ति व्यवस्था में निहित नियमों का पालन करने हेतु आत्मप्रेरित होता है ताकि भावनाओं एवं शक्तियों को स्व नियन्त्रण द्वारा सुचारु रूप से संचालित किया जाये।

स्व-अनुशासन हमेशा सकारात्मक एवं सृजनात्मक होना चाहिए स्व-अनुशासन व्यक्ति विवेक, परिस्थिति व प्रकृति के अनुसार सुनिश्चित करता है, या कर सकता है कि किस प्रकार का अनुशासन उसके लिये अपेक्षित है और वह उसे बनाये रखने के लिए कौनसी विधि उपयुक्त रहेगी।

स्व-अनुशासन के द्वारा समाज, संस्था, संगठन प्रणाली आदि में व्यवस्था बनाई जा सकती है। किसी कार्य की प्रकृति के अनुसार परिस्थितियों का निर्माण तथा उन परिस्थितियों या प्रबन्ध के नियमों का पालन करने हेतु स्वयं के व्यवहार पर नियन्त्रण रखने हेतु स्व-अनुशासन अनिवार्य है। स्व-अनुशासन व्यक्तियों के लिए नियमों की व्यवस्था कर उन्हें सुरक्षा प्रदान करता है।

स्व-अनुशासन मर्यादा में रहना तथा नियमों का स्वभाव से पालन करना, परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करना सिखाता है, जिससे स्वयं के विचारों एवं व्यवहारों पर विवेकपूर्ण नियन्त्रण रहता है जो अनुचित व्यवहार करने पर रोक लगाता है, जिससे व्यवस्था बनी रहती है। मनुष्य अनावश्यक द्वन्द, संघर्ष एवं तनाव से बचा रहता है। अतः आवश्यक है कि निम्न टिप्स को अपनाया जाये –

1. Keep Brain Cool – मन पर काबु रखे
2. Keep Smiley face – मुस्कुराते रहिये
3. Be Confident – आत्म विश्वासी बने
4. Be Sincere – संस्कारी बने

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

मानवमूल्य परक शब्दावली का विश्वकोश – डॉ. धर्मपाल मैनी,

युवादृष्टि अंक 5 मई 2017

व्यक्तित्व विकास – मुनि धर्मेश

*** Corresponding Author:**

डॉ. संगीता सोनी
व्याख्याता, बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई)
गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

संगीता सोनी (इनमार्काट)